**श्रीभगवानुवाच**

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।

दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥

**शुद्ध बुद्धि, डर से परे, मन बस जाये ज्ञान।**

**यज्ञ, दान, तप, संयम हो, सरल, वेद का ध्यान ॥१६– १॥**

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥

**सत्य, अहिंसा, शांति रहे , दोषारोपण त्याग**

**लोभ क्रोध भय मुक्त हो, भद्र करुण सहभाग ॥१६– २॥**

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता ।

भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥

**तेज़, क्षमा, धीरज धरे, ईर्ष्या ना सम्मान।**

**अर्जुन दैवीय गुण यही, पुरूष पुनित तू मान ॥१६– ३॥**

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।

अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥

**दम्भ, दर्भ, अभिमान भी, क्रोधी और कठोर।**

**अर्जुन वो ज्ञानी नही, असुर गुणा सिरमौर ॥१६– ४॥**

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।

मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥

**दिव्य गुणों से मोक्ष मिले, बन्धन असुर ही होय।**

**हे अर्जुन चिन्तित न हो, दैवी गुण तू बोय ॥१६– ५॥**

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।

दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥

**बसे लोक इस जीव दो, असुर व देव समान।**

**दैव गुण मैंने कहे, असुर गुणों को जान ॥१६– ६॥**

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः ।

न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥

**क्या करें क्या न करें, नही असुर को ज्ञान।**

**सदाचरण होता नहीं, नही सत्य का भान ॥१६– ७॥**

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।

अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥

**कहते है आधार नही ,झूठा यह संसार।**

**निर्माता ईश्वर नहीं, नर–नारी ही सार ॥१६– ८॥**

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ।

प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥

**स्वीकारे उस सोच को, नष्ट आत्म अज्ञान।**

**अनुपयोगी कर्म करे, निकले जग की  जान ॥१६– ९॥**

काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः ।

मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः ॥

**कामशरण संतुष्ट न हो, दंभ मदन और मान।**

**क्षणभंगुर के मोह में, उसका रहता ध्यान ॥१६– १०॥**

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।

कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥

**मरने तक चिन्ता करे, भय भी रहे अपार।**

**काम भोग में लिप्तता, परम लक्ष्य संसार ॥१६– ११॥**

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।

ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥

**आशा बँधी हज़ार है, काम क्रोध भरमार।**

**काम भोग में मन रहे, काला धन संचार ॥१६– १२॥**

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ।

इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥

**मन में मेरे आज है, पाउँगा हर हाल।**

**जो है उस में और भी, होगा मालामाल ॥१६– १३॥**

असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ।

ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥

**शत्रू मार मैंने दिये, मारुँ अन्य हज़ार।**

**ईश्वर, भोगी, सिद्ध हूँ, सुख– बल अपरंपार ॥१६– १४॥**

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया ।

यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥

**मै कुलीन धनवान हूँ, मेरे कौन समान ।**

**यज्ञ करूँ मैं दान करुँ, मोहित मन अज्ञान ॥१६– १५॥**

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।

प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥

**चिन्ता से है घिरा हुआ, बुना मोह का जाल।**

**कामभोग आसक्त रहे, चले नर्क की चाल ॥१६– १६॥**

आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः ।

यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥

**ख़ुद को श्रेष्ठ समझ दंभी, धन-मद मे हो चूर।**

**नाममात्र को यज्ञ कर, विधि विधान से दूर ॥१६– १७॥**

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः ।

मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ॥

**दर्प बल अभिमान करे, क्रोध काम का वास।**

**ईर्ष्या व निन्दा करे, कुछ ना आवे रास ॥१६– १८॥**

तानहं द्विषतः क्रुरान्संसारेषु नराधमान् ।

क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥

**ये ईर्ष्यालु क्रूर जो, हो अधमी संसार।**

**अशुभ योनि मैं डालता, असुर ये बारंबार ॥१६– १९॥**

आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि ।

मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् ॥

**पुनः आसुरी योनि मे , जन्म हो बारंबार।**

**नही पा  सके वो मुझे, धर्म न गति हर बार ॥१६– २०॥**

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥

**तीन द्वार इस नर्क के, करता जीव विनाश।**

**काम क्रोध सह लोभ है, करिये इनका नाश ॥१६– २१॥**

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः ।

आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ॥

**तीन द्वार अज्ञान के, मुक्त पार्थ जो पाय।**

**मंगल ख़ुद का वो करे, परमो गति  समाय ॥१६– २२॥**

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।

न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥

**समझे  ना जो शास्त्र को, मनमानी का काम।**

**सुख सिद्धि मिलती नहीं, परम गति नही धाम ॥१६– २३॥**

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ।

ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥

**शास्त्र ज्ञान प्रमाण है, निश्चित करता काम।**

**विधि विधान को जानकर, होवे कर्म सुकाम ॥१६– २४॥**

**ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे**

**श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसंपद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः ॥१६॥**